भारत में वैश्वीकरणः पर्यावरण के लिए एक चुनौती

प्राप्तिः 05.11.2024
स्वीकृतः 26.12.2024

84

श्रीमती भावना यादव
अस्सिटेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)
कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय बादलपुर
ईमेलः bhavna_y2004@yahoo.co.in

सारांश

पर्यावरण हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है, परंतु वर्तमान में देखा यह गया है कि विकास की दौड़ में हम संसाधनों का दुरुपयोग कर रहे हैं एवं पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं। भारत एक तेजी से विकसित होने वाली अर्थव्यवस्था है,जहाँ वैश्वीकरण के पश्चात विश्व अर्थव्यवस्था के साथ तीव्र गति से व्यापार बढ़ा। परंतु वर्तमान मे यही वैश्वीकरण पर्यावरण के लिए एक चुनौती बन गया है। इसकी कीमत हमे पर्यावरण द्वारा चुकानी पड़ रही है। इस लेख का उद्देश्य यह जानना है कि वैश्वीकरण के द्वारा अपनाई गई नीतियों के कारण पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा है। क्योंकि पर्यावरण वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए ही आवश्यक है, और वर्तमान में नीतिकारो द्वारा धारणीय विकास या सत्त विकास की अवधारणा को अंगीकार किया गया है, इसलिए विकास के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों को बचाए रखना तथा पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना यह विश्व भर में सरकारों का उद्देश्य हो गया है। इस शोध पत्र में पर्यावरण पर वैश्वीकरण के कारण पर्यावरण पर जो प्रभाव पड़े हैं उनका अध्ययन किया गया है तथा उससे बचने के उपाय एवं सतत विकास की आवश्यकता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिन्दु

वैश्वीकरण, पर्यवरण, प्राकृतिक संसाधन, प्रदूषण, आर्थिक सुधार, जैव विविधता, सत्तविकास नीतिनिर्माण, नवाचार, विदोहन।

परिचय

वैश्वीकरण भारतीय सरकार द्वारा अपनाई गई एक ऐसी पहल थी जो 1991 में देश के विकास के लिए की गई थी। इस प्रक्रिया को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव और वित्त मंत्री डॉ मनमोहन सिंह द्वारा आर्थिक सुधारो के एक हिस्से के रूप में प्रारंभ किया गया था। आर्थिक सुधारो को NEP का नाम दिया जाता है, यह आर्थिक सुधार जो उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के नाम से जानें जाते है, इनका उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ना था, जिस से देश के अंदर जो पूंजी की कमी थी उसको कुछ हद तक पूरा किया जा सके, रोजगार उपलब्ध हो सके एवं देश का समग्र विकास हो सके। वैश्वीकरण की नीति से भारत को कई महत्वपूर्ण लाभ हुए

जैसे आर्थिक विकास, रोजगार के अवसर उत्पन्न होना, तकनीकी उन्नति, निर्यात में वृद्धि,उपभोक्ताओं को विकल्प, शिक्षा चिकित्सा की बहतर सेवाएं प्राप्त हुई एवं संस्कृति का आदान–प्रदान भी इस नीति के द्वारा होता रहा। अर्थव्यवस्था के उदारीकरण ने भारी मात्रा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित किया, जिससे प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, ऑटोमोटिव और फार्मास्यूटिकल्स जैसे उद्योगों का विकास हुआ। इस निवेश ने रोजगार के अवसर पैदा किए और बुनियादी ढांचे में सुधार किया। वैश्वीकरण ने भारत में प्रौद्योगिकी और ज्ञान के हस्तांतरण को सुगम बनाया है। इससे विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार और विकास को प्रेरणा मिली है, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और सॉफ्टवेयर सेवाओं में, जिससे भारत एक वैश्विक आईटी हब बन गया है।

भारत में सेवाओं, विनिर्माण और निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। वैश्वीकरण ने भारत में आर्थिक परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक का काम किया है, जिससे अवसर और चुनौतियाँ दोनों ही सामने आई हैं। परंतु इस नीति के कारण जो प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक विदोहन हुआ एवं अन्य दुष्परिणाम हुए उसका हमारे देश के पर्यावरण पर अत्यधिक हानिकारक प्रभाव पड़ा। इस नीति के द्वारा हमारे देश पर नकारात्मक प्रभाव पड़े, लाभों के बावजूद, वैश्वीकरण ने आय असमानता में वृद्धि और कुछ क्षेत्रों के हाशिए पर जाने एवं खतम होने जैसी चुनौतियाँ भी पैदा की हैं। वैश्वीकरण के लाभ जनसंख्या के बीच समान रूप से वितरित नहीं किए गए हैं। अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास करने के लिए और बुनियादी ढांचे को विकसित करने के लिए संसाधनों का विदोहन अत्यधिक मात्रा में होने लगा एवं उपभोक्तावाद को भी बढ़ावा मिला, खासकर संपन्न वर्गों के उपभोग में अत्यधिक वृद्धि हुई व्यापार एवं विदेशी मुद्रा जुटाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से दोहन होने लगा और उपभोक्ता वस्तुएं अत्यधिक मात्रा में उत्पादित होने लगी। उपभोक्ता वस्तुओं के साथ साथ कचरे का भी बड़े पैमाने पर उत्पादन होने लगा इस कचरे के निस्तारण के लिए सरकार के पास सुविधा न होने के कारण गंभीर समस्याएं उत्पन्न होने लगीं जैसे वानिकी, मछुआरे, चरवाहा, दस्तकारी से जुड़े परंपरागत रोजगार एवं स्वास्थ्य पर इनका बहुत बुरा असर पड़ा और हम भारी मात्रा में वस्तुओं का उपभोग करने लगे, साथ ही प्लास्टिक के उपयोग में भी अत्यधिक वृद्धि हुई,जहां–जहां लोग जाते वहां प्लास्टिक के पैकेट में बंद वस्तुओं का उपभोग करते एवं उनको इधर–उधर फेंक देते, जिसका पर्यावरण पर प्रभाव पड़ने लगा। प्लास्टिक बहुत जल्दी निस्तारित नहीं हो पाता एवं कचरे का एक बहुत महत्वपूर्ण साधन बनता है, इसका निस्तारण करने के लिए इनको जलाया भी जाने लगा जिससे वायु प्रदूषण पैदा होने लगा पर्यावरण मानकों एवं नियमों को सरकार के द्वारा नजरअंदाज किया गया जिससे यह समस्या और ज्यादा बड़ी हो गई। अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोल देने की वजह से बहुत सी ऐसी कंपनियां भारत में आकर विकसित हो गईं जो दूसरे देशों में प्रदूषण के कारण अपना कार्य नहीं कर पा रही थीं, जिससे प्रदूषण और ज्यादा बढ़ा, और वर्तमान की स्थिति किसी से छिपी नहीं है।

वैश्वीकरण का पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावः

वैश्वीकरण के कारण हुए पर्यावरण प्रदूषण के भारत में अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पड़े जिनमें से कुछ निम्न हैं।

1. **प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहनः** वैष्वीकरण के कारण औद्योगिकीकरण और शहरीकरण में वृद्धि हुई है तथा मांग मे वृद्धि हुई है ,परिणाम स्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन और पर्यावरण पर दबाव बढ़ा है। जिससे संसाधनों की कमी और पर्यावरणीय असंतुलन पैदा हो रहा है।

2. **प्रदूषणः** औद्योगिक गतिविधियों और परिवहन में वृद्धि के कारण उद्योगों और वाहनों की संख्या में वृद्धि हुई जिस के कारण वायु, जल, और मृदा प्रदूषण में वृद्धि हुई है। विशेष रूप से विकासशील देशों में, जहां पर्यावरणीय कानून कमजोर होते हैं, वायुप्रदूषण गंभीर समस्या बन गई है। उद्योगों द्वारा नदियों और महासागरों में कचरा और रसायनों का निष्कासन जल स्रोतों को प्रदूषित कर रहा है। इससे जलजीवों की मृत्यु दर बढ़ी है और पीने का पानी भी दूषित हो रहा है। औद्योगिक कचरे, तेल रिसाव, और प्लास्टिक कचरे के समुद्र में जाने से समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। इससे समुद्री जीवों के जीवन चक्र में हस्तक्षेप होता है और उनका अस्तित्व खतरे में पड़ता है।

3. उपभोक्तावाद के बढ़ने से कचरे की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है विशेष रूप से प्लास्टिक कचरे एवं ई कचरे में। ये दोनों ही पर्यावरण और समुद्री जीवन के लिए गंभीर खतरा हैँ एवं इनका निस्तारण एक चुनौती बन गया है।

4. **जैव विविधता पर असरः** वैश्वीकरण ने भूमि उपयोग में परिवर्तन और वनों की कटाई को बढ़ावा दिया है, जिससे जैव विविधता को नुकसान पहुंचा है। जैव विविधता भी पर्यावरण के लिए अत्यंत आवश्यक है, इसमे नुकसान होने से प्राकृतिक असंतुलन की समस्या, लुप्त होते वन्य जीव जन्तु के रूप मे सामने आने लगी है।

5. **जलवायु परिवर्तनः** ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि के कारण जलवायु परिवर्तन की समस्याएं बढ़ी हैं, जैसे कि ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र का स्तर बढ़ना और विपरीत मौसम की घटनाएं। वैश्वीकरण ने ऊर्जा की मांग को बढ़ाया है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ा है। इसके परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन की समस्या उत्पन्न हुई है।

6. **पर्यावरणीय क्षतिः** तेजी से होने वाले औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण पर्यावरणीय क्षति बढ़ी है, जो सत्त विकास के लक्ष्यों के विपरीत है। भूमि की मांग और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के कारण वनों की कटाई हो रही है।

7. **आवश्यक वस्तुओं की अत्यधिक मांगः** वैश्वीकरण ने आवश्यक वस्तुओं की मांग को बहुत बढ़ा दिया है, जिसके कारण उत्पादन प्रक्रियाओं में तेजी आई है और पर्यावरणीय नुकसान हुआ है। उपभोग में वृद्धि के साथ–साथ अपशिष्ट उत्पादन भी बढ़ा है। जिससे कचरा प्रबंधन और निपटान की समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।

8. **भूमि क्षरणः** औद्योगिक गतिविधियों के विकास और निर्यात के कारण बढ़ती कृषि गतिविधियों से भूमि की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है। वैश्वीकरण ने कृषि विस्तार और औद्योगिकरण को बढ़ावा दिया है । जिससे मिट्टी का कटाव और भूमि क्षरण हो रहा है।

9. **परिस्थितिकी तंत्र का विनाशः** निर्माण परियोजनाओं, खनन और अवसंरचना विकास के कारण प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो रहे हैं। इससे स्थानीय वन्यजीवों और पौधों की प्रजातियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

10. **ओजोन परत की क्षतिः** कुछ उद्योगों द्वारा उत्पन्न रसायन, जैसे कि क्लोरोफ्लोरोकार्बन, ओजोन परत को नुकसान पहुंचा रहे हैं। ओजोन परत के पतले होने से पृथ्वी पर हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों का प्रभाव बढ़ सकता है।

11. **प्राकृतिक आपदाओं की वृद्धिः** जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं, जैसे बाढ़, सूखा, और तूफान की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो रही है। यह पर्यावरण और मानव जीवन के लिए गंभीर खतरा है।

12. **स्वास्थ्य पर प्रभावः** प्रदूषण और पर्यावरणीय असंतुलन के कारण लोगों के स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वायुप्रदूषण के कारण श्वास संबंधी बीमारियां बढ़ रही हैं, और जल प्रदूषण के कारण जलजनित रोग फैल रहे हैं।

इन सब के अलावा वैश्वीकरण के फलस्वरुप पिछले दो दशकों में बुनियादी ढांचे जैसे सड़के, बंदरगाह,शहरी बुनियादी ढांचा, विद्युत परियोजनाएं आदि के निर्माण में बेतहाशा बढ़ोतरी हुई है जिसके कारण बहुत सारी जमीन इन परियोजनाओं के लिए इस्तेमाल की गई जो कि जंगलों को काटकर बनाई गई थी या खेतों और चारागाह की थी। टिहरी बांध परियोजना जिसका क्षेत्रफल 52 कि०मी2 (560,000,000 वर्ग फुट) है इसका जीवंत उदाहरण है, जिसमें बड़े पैमाने पर किसानों की भूमि का इस्तेमाल किया गया एवं 560,000,000 वर्ग फुट भूमि पानी के बीच में डूब कर रह गई जो गत वर्षो में खेती के काम आई थी। इन बदलावों के कारण पर्यावरण एवं सामाजिक प्रभाव पड़े। बड़ी कंपनियां पर्यावरण एवं हमारे खनिज के स्रोतों को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर रही है। वर्तमान में वायनाड का भूस्खलन भी पश्चिमी घाट इलाके में चल रहे अत्यधिक खनन का नतीजा है, जिसकी संभावना गाडगिल समिति या पारिस्थितिकी विशेषज्ञ पैनल ने सन 2010 में ही जताई थी। अत्यधिक खनन के कारण भूमि का कटान बढ़ गया है एवं इस प्रकार की आपदाऐ आ रही हैं।

आयात में दी गई छूट के कारण हमारा देश विशैले कचरे का एक बहुत बड़ा उत्पादक बन गया है जिसमें सबसे बड़ा भाग प्लास्टिक का है। प्लास्टिक कचरे का आयात दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कचरे में कंप्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक उद्योग का भी हाथ लगातार बढ़ता जा रहा है हमारे देश के अंदर बहुत बड़ी मात्रा में ई कचरा पैदा हो रहा है जिसका निस्तारण करना एक बहुत बड़ी समस्या है एवं पर्यावरण पर इसका अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ रहा है। विलासिता की वस्तुओं के उत्पादन में बड़ी मात्रा में वृद्धि हुई है जैसे लैपटॉप मोबाइल फोंस, स्मार्ट वॉच, रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर इत्यादि का उपभोग बढ़ा है, यह सब पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले उत्पाद है, डब्बा बंद वस्तुओं की मांग बढ़ रही है , जिससे प्लास्टिक पदार्थ एवं प्लास्टिक कचरे का उत्पादन बढ़ गया है। यातायात के साधनों का बड़ी मात्रा में इस्तेमाल होना और जीवाष्म ईंधन का इस्तेमाल करने वाले यातायात जैसे कार, हवाई जहाज इत्यादि एक तो संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं और दूसरी तरफ पर्यावरण प्रदूषण को भी पैदा करती है। करोना काल में यह देखा गया था कि आसमान साफ हो गया था। कितनी जगह पर दूरस्थ पहाड़ भी दिखाई देने लगे थे। यह सब इस कारण हुआ था कि यातायात के साधन सड़कों पर नहीं चल रहे थे, हवाई मार्ग भी बंद था, एवं सभी फेक्टरियाँ भी बंद थी। जिसके कारण प्रदूषण में भारी मात्रा में कमी आई। यह एक जीवंत उदाहरण इस बात का है कि यदि हम इन सब साधनों

का कम से कम उपयोग करेंगे तो पर्यावरण कुछ हद तक सुधारा सकता है, और वर्तमान में जो स्थिति पैदा हो रही है, पृथ्वी एक बम का गोला बनती जा रही है उस से भी किसी हद तक निजात पाई जा सकेगी या उसमें कमी की जा सकेगी । यदि मनुष्य अभी भी नहीं जागा और इन सब के लिए सकारात्मक कदम नहीं उठाए गए तो जून 2024 में जो तापमान की स्थिति हुई है और तापमान में गत वर्षो की रिकॉर्ड तोड़े हैं यह स्थिति बढ़ती चली जाएगी और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या हमारे सामने बृहद रूप से खड़ी हो जाएगी। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अभी भी जाग जाएं और पर्यावरण प्रदूषण से बचने के उपाय करें, यातायात के लिए सार्वजनिक यातायात के साधनों का प्रयोग करें, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का उपयोग समझदारी से सीमित मात्रा में किया जाए, उपभोक्तावाद में कमी लाएँ, कचरे का निस्तारण सही प्रकार से करें एवं ऊर्जा संरक्षण करें, सभी प्रकार की ऊर्जा को संरक्षित करने की कोशिश जाए तो इतने छोटे कदम से ही बहुत बड़ी मात्रा में पर्यावरण प्रदूषण को रोका जा सकता है। स्टेटिस्टिका की रिपोर्ट के अनुसार भारत की 96% आबादी खतरनाक वायु प्रदूषण स्तर के संपर्क में है।

IQAir द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार भारत सबसे ज्यादा प्रदूषित देशों में बांग्लादेश एवं पाकिस्तान के बाद तीसरे स्थान पर है। इस से यह पता चलता है कि भारत की स्थिति प्रदूषण के मामले में और भी ज्यादा शोचनीय है। इसलिए हमें वैश्वीकरण के कारण जो नुकसान हो रहा है उसको रोकने की कोशिश करनी चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पसांगठन के अनुसार भारत की लगातार बढ़ रही वायु और जल प्रदूषण की समस्याओं के कारण आने वाले वर्षों में पर्यावरण प्रौद्योगिकियों और समाधानों की मांग बढ़ जाएगी।

माना की विकास के लिए अर्थव्यवस्था का गतिशील होना तथा वैश्वीकरण, एक आवश्यकता है परंतु यह विकास धारणीय विकास होना चाहिए जो हमारे पर्यावरण को क्षति ना पहुंचा एवं संसाधनों को भविष्य की धरोहर के रूप में लेकर संसाधनों का दुरुपयोग ना करें। उपभोग में मितव्ययिता अपनाई जाए और केवल उतनी ही वस्तुओं का उपयोग किया जाए जो आवश्यक हो।

इन सभी मुद्दों के समाधान के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ठोस कदम उठाने और सतत विकास को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, प्रत्येक व्यक्ति को भी पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभानी होगी।

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव को रोकने या कम करने के लिए उपाय किए जा सकते हैं, तथा सतत विकास की प्राप्ति की जा सकती है। वर्तमान में देखा यह गया है कि विश्व भर में सत्त विकास की अवधारणा पर जोर दिया जा रहा है जो वर्तमान विकास के साथ–साथ भविष्य के लिए वातावरण एवं संसाधनों के संरक्षण पर बल देती है। अतः पर्यावरण को बचाना आवश्यक हो जाता है यह दोनों ही उपायों के द्वारा किया जाना चाहिए जो हैं पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण ये उपाय, नीति निर्माण, शिक्षा, सामुदायिक सहभागिता एवं तकनीकी नवाचार के द्वारा किए जा सकते हैं।
कुछ उपाय निम्नवत हैं जैसे :

1. **नीति निर्माण तथा नियमनः** पर्यावरण से संबंधित नीति निर्माण, पर्यावरण संरक्षण हेतु कड़े नियम और मानक स्थापित किए जाने चाहिए जिससे औद्योगिक गतिविधियों से होने वाले प्रदूषण

एवं प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक विदोहन को कम किया जा सके।

2. **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षणः** जैसे वन संरक्षण, जल संरक्षण, वायु संरक्षण, जैव विविधता की रक्षा इन सभी के लिए सरकार को नीतियों का निर्माण करना चाहिए एवं इन नीतियों का क्रियान्वयन भी किया जाना चाहिए जिससे यह सभी संसाधन सुरक्षित रहें।

3. कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए सरकार को ऐसी प्रणाली अपनानी चाहिए जो कार्बन उत्सर्जन करने वाली फैक्ट्री पर करों के माध्यम से नियंत्रण रखें, प्रदूषण फैलाने के लिए कर एकत्रित किए जाने चाहिए एवं इन करों को पर्यावरण संरक्षण के उपायों पर खर्च किया जाना चाहिए।

4. **स्वच्छ ऊर्जा एवं नवाचारः** नव्वीकरण ऊर्जा स्रोतों को बढावा दिया जाना चाहिए जैसे सौर ऊर्जा, जल ऊर्जा, पवन आदि इन स्रोतों के विकास एवं इनके इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन दिए जाने चाहिएं।

5. विदेशी निवेशकों को प्रोत्साहित किया जाए परंतु यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए की वे अतिउत्पादन ना करें एवं प्रदूषण को रोकने के उपाय अपनाएं।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण के कारण उत्पादन और उपभोग की जो दौड़ लगी है, उसके कारण देश के पर्यावरण एवं संसाधनों पर जो असर पढ़ा है उसकी भरपाई नहीं की जा सकती। वैश्वीकरण भारत मे पर्यावरण के लिए एक ऐसी चुनौती बन गया है जिसका सामना हमें ही नहीं आगे आने वाली पीढ़ियों को भी करना होगा। विकास के लिए एक अंधी दौड़ शुरू हो चुकी है। सबसे बड़ी बात यह है कि विकास की दौड़ में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह विकास सत्त होना चाहिए एवं ऐसा नहीं होना चाहिए कि हम कल की परवाह किए बिना आज अति उत्पादन कर डालें और सभी संसाधनों को समाप्त कर डालें एवं पर्यावरण को नुकसान पहुंचाएं। यह समझदारी देश के लोगों में तथा सरकार दोनों में होने आवश्यक है। सरकार को भी यह ध्यान देना चाहिए कि विकास हो पर पर्यावरण की शर्तों पर नहीं। पर्यावरण हमारे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है इसलिए इसका संरक्षण करना एवं स्वस्थ पर्यावरण में जीना हम सब का अधिकार ही नहीं हमारी आवश्यकता भी है। वैश्वीकरण के लाभों को उठाने के लिए हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जो पर्यावरण को उसके द्वारा हानि हो रही है वह केवल हमें ही नहीं हमारे आने वाली पीढियां को भी नुकसान पहुंचाएगी। इन सभी बातों का ध्यान रखते हुए वैश्वीकरण को अपनाया जाना चाहिए। यह हम पर निर्भर करता है कि हम अपनी सूझबूझ से इसके लाभ उठाएं या इसके द्वारा जनित हानियां को लाभ के ऊपर हावी होनी दें।

संदर्भ

1. इंडियाज इकोलॉजिकल फुटप्रिंटः ए बिजनेस पर्सपेक्टिव, जीएफएन एवं सीआईआई, नई दिल्ली, 2008, http://www.footprintnetwork.
2. श्रीवास्तव असीम और कोठारी आशीष पृथ्वी मन्थन वैश्विक भारत बनने की कहानी, राजकमल प्रकाशन 2016 पृ.सं 21,22,203

3. https://www.adb.org
4. https://www.worldbank.org
5. https://www.statista.com
6. https://www.iqair.com
7. https://www.trade.gov/country
8. https://water.usask.ca/valuing-water-global-assessment/report/chapter-2.
9. https://www.samanyagyan.com/hindi/gk-pollution-types-causes-and-affect
10.. https://www.siemens.com/global/en
11. https://www.indiascienceandtechnology.gov.in/
12. www.hydropower.org
13. www.indiaenvironmentportal.org.in
14. https://moef.gov.in/environment-protection
15. https://ourworldindata.org
16. https://ndtv.in